

डॉ. मनीषा पाण्डेय तिवारी

पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

मुखौटा जीव-दया का

प्रोफेसर साहिबा यानी मैडम वर्मा की पहचान एक 'परम दयालु' समाज सेविका की थी। सड़कों के आवारा कुत्तों को देखकर उनकी आँखों में ममता उमड़ पड़ती और वह कार रोककर उन्हें महंगे बिस्कुट खिलाने लगतीं। उनकी कार की डिग्गी हमेशा चौराहे की गायों के लिए ताज़े चारे से भरी रहती थी, और कार की पिछली सीट पर हमेशा उनका अपना पालतू कुत्ता 'रैम्बो' राजशाही अंदाज़ में बैठा रहता था। उनकी इस 'महानता' पर पूरा कॉलेज फ़िदा था।

एक दिन कॉलेज के बाद मूसलाधार बारिश हो रही थी। कॉलेज के बीमार प्रोफेसर डॉ. शर्मा बस स्टॉप पर थर-थर कांप रहे थे। उन्होंने अपने घर जाने के लिए मैडम से लिफ्ट मांगी, तो मैडम ने बेरुखी से कहा, "ओह हो शर्मा जी, मेरी कार में गायों का चारा रखा है! आपके गीले कपड़ों से वह गंदा हो जाएगा। आप कोई ऑटो देख लीजिए।"

कुछ ही दिनों बाद दोपहर की धूप में कॉलेज की गर्भवती क्लर्क, सुनीता, थकावट और भारीपन की वजह से चलने में तकलीफ महसूस कर रही थी। उसने सोचा कि मैडम भी उसी रास्ते अपने घर जा रही हैं, तो क्यों न लिफ्ट मांग ली जाए। उसने आस से हाथ उठाया और बोली, "मैडम, मुझे चलने में थोड़ी दिक्कत हो रही है, क्या आप मुझे रास्ते में छोड़ देंगी?"

मैडम ने पिछली सीट पर बैठे अपने कुत्ते रैम्बो पर हाथ फेरते हुए कहा, "अरे सुनीता! तुम्हें दिखता नहीं कि कार में मेरा रैम्बो बैठा है? इसे अनजाने इंसानों से सख्त एलर्जी है। अगर इसने तुम्हें काट लिया, तो मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।" इतना कहकर मैडम ने कार का शीशा ऊपर चढ़ाया और आगे बढ़ गईं।

सुनीता पीछे छूट गई और भारी मन से यही सोचती रह गई कि शायद मैडम का 'ज्ञान' ही सही है और वही गलत है— क्योंकि आज के इस 'सभ्य' समाज में इंसान होने की कीमत शायद किसी बेज़ुबान के पैर की धूल से भी कम हो चुकी है! इंसानियत की मय्यत पर जानवरों के प्रेम का कफ़न ओढ़ना ही तो आजकल के 'हाई-प्रोफाइल' दयालु होने का नया फैशन है!

कार आगे बढ़ी और चौराहे पर जाकर रुकी। मैडम ने बड़ी आत्मीयता से कार का दरवाजा खोला, रैम्बो को नीचे उतारा और डिग्गी से घास निकालकर गायों के आगे बिछा दी। वह मन ही मन अपनी इस 'महानता' पर मुग्ध हो रही थीं...